# जी-20 सम्मेलन एवं जलवायु परिवर्तन

## कुछ जिज्ञासा व परामर्श






आचार्य अग्निव्रत

# ओ३म्

## माननीय प्रधानमन्त्री जी से सार्वजनिक विनम्र निवेदन

**तिथि :** फाल्गुन शु. अष्टमी वि.सं. २०७९,
**दिनांक :** 27 फरवरी 2023

सेवायाम्

**माननीय श्रीमान् नरेन्द्र जी मोदी**
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

**विषय** – जी–20 सम्मेलन एवं जलवायु परिवर्तन – कुछ जिज्ञासा व परामर्श

मान्यवर!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विनम्र निवेदन है कि यह गर्व का विषय है कि एक वर्ष के लिए भारत जी–20 देशों की अध्यक्षता करेगा। आपके कुशल नेतृत्व में जी–20 देश विश्व में हो रहे भयानक जलवायु परिवर्तन की त्रासदी पर कुछ तर्कसंगत व वैज्ञानिक प्रयास करेंगे, ऐसी आशा है। अब तक हुए विभिन्न शिखर सम्मेलनों से परिणाम निरन्तर प्रतिकूल ही प्राप्त हो रहे हैं। विश्व में बढ़ती दावानल की घटनाएँ, शीतप्रधान देशों में हीट–वेव, कहीं बाढ़, सूखा, अनियमित वर्षा, ओलावृष्टि, बर्फबारी, तूफान, चक्रवात, भूस्खलन और अभी–अभी तुर्की–सीरिया के विनाशकारी भूकम्प के साथ ही विश्व के अनेक देशों में आने वाले भूकम्पों की शृंखला आदि घटनाएँ विश्व के राष्ट्राध्यक्षों, वैज्ञानिकों एवं पूंजीपतियों के भरसक प्रयास के उपरान्त भी इस धरती के लिए संकट बन रही हैं।

मान्यवर! ऐसे समय में कोई यह विचार करने के लिए तैयार क्यों नहीं है कि ऐसा क्यों हो रहा है? क्यों आपदा निरन्तर बढ़ रही है? मेरा निश्चित मत है कि जलवायु परिवर्तन के जो कारण बताये जा रहे हैं, उनके पीछे न तो पूर्ण वैज्ञानिकता ही है और न ईमानदारी ही। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कुछ लोग संसार के 8 अरब लोगों के साथ भयानक छल कर रहे हैं और सत्य को सबसे छुपाया जा रहा है।

मान्यवर! मैं पूर्व में भी आपको निवेदन कर चुका हूँ कि मैं एक वैदिक वैज्ञानिक हूँ और जानता हूँ कि वर्तमान वैज्ञानिक क्या-क्या भूलें कर रहे हैं, कर सकते हैं और सम्भवत: अनेकत्र बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ यथार्थ शोध को सार्वजनिक नहीं होने देतीं, क्योंकि उन्हें अपने व्यापार की ही चिन्ता है, न कि धरती को बचाने की।

महोदय! मैं आपके माध्यम से जी-20 देशों के सभी राष्ट्राध्यक्षों और संसार के वैज्ञानिकों से जानना चाह रहा हूँ-

1. क्या वे वास्तव में मानव जाति को बचाना चाहते हैं अथवा प्राकृतिक प्रकोपों से होने वाले नरसंहार को वे जनसंख्या की कमी मानकर सन्तुष्ट होकर बैठे हैं वा प्रसन्न हैं?

2. वर्तमान समय में निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ रहे विज्ञान व तकनीक में विशेष रूप से उल्लेखनीय सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.), टेक्नोलॉजी की बढ़ती भूख, औद्योगीकरण, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक एवं अंग्रेजी दवा आदि के कारण ही सम्पूर्ण विश्व विनाश के कगार पर है, क्या इस दु:खद सत्य पर कोई गम्भीरता से विचार कर रहा है?

3. क्या सूचना प्रौद्योगिकी एवं A.I से सम्बन्धित तरंगों की संरचना व स्वरूप तथा जिस आकाश में ये गमन करती हैं, की संरचना

व स्वरूप को वैज्ञानिकों ने भली प्रकार जान लिया है? यदि नहीं, तो इनके अत्यधिक प्रयोग की आतुरता क्या बुद्धिमानी है?

4. क्या इन तरंगों से उत्पन्न विद्युत् चुम्बकीय क्षेत्र पृथिवी पर विद्यमान प्रत्येक वस्तु एवं पृथिवी के चुम्बकीय क्षेत्र को प्रभावित नहीं करेगा? क्या प्रभावित होता हुआ चुम्बकीय क्षेत्र पृथिवी के स्व-अक्ष पर घूर्णन तथा इसके अक्ष व ध्रुवों की दिशा व दशा को प्रभावित नहीं करेगा?

5. क्या पृथिवी के अक्ष की परिवर्तित दिशा व दशा के कारण भूगर्भीय क्रियाओं के साथ-साथ पृथिवी के बाहर वायुमण्डलीय गतिविधियों में परिवर्तन नहीं आयेगा?

6. क्या इन दोनों ही प्रकार के परिवर्तनों के कारण भूकम्प, तूफान, चक्रवात, बाढ़, सूखा व गर्मी जैसे उपद्रव नहीं होंगे?

7. क्या प्रत्येक प्रकार की टेक्नोलॉजी के निर्माण व प्रयोग में ऑक्सीजन की कमी एवं प्राय: कार्बन डाइऑक्साइड एवं इससे भी बहुत अधिक ग्रीनहाउस प्रभाव उत्पन्न करने वाली घातक गैसें उत्पन्न नहीं होतीं? दुर्भाग्यवश आज संसार को केवल $CO_2$ व $CH_4$ गैसों का ही भय दिखाकर लकड़ी जलाने एवं पशुपालन से रोकने की ही दूरगामी योजनाएँ बनायी जा रही हैं अर्थात् केवल निर्धन वर्ग को ही निशाना बनाया जा रहा है तथा विभिन्न कम्पनियों को लाभ पहुँचाया जा रहा है।

8. क्या कोई यह बतायेगा कि जब संसार में पशुओं की संख्या वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक थी तथा सभी लकड़ी जलाकर ही अपनी ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति करते थे, उस समय प्राकृतिक संकट वर्तमान की अपेक्षा नगण्य क्यों थे?

9. क्या कोई बतायेगा कि ऊर्जा के उपभोग को विकास का मानदण्ड बनाकर प्रकृति के अत्यधिक दोहन को क्यों बढ़ाया जा रहा है?

10. क्या कोई वैज्ञानिक यह बतायेगा कि पृथिवी के गर्भ से पेट्रोलियम तेल व गैस, खनिज, यूरेनियम, कोयला एवं जल के अत्यधिक दोहन से क्या भूगर्भीय क्रियाएँ दुष्प्रभावित होकर भूकम्प आदि भयंकर आपदा नहीं आयेंगी?

11. क्या पृथिवी के ऊपर विद्यमान पदार्थ लकड़ी आदि एवं मनुष्य व पशु आदि के श्रम से प्राप्त ऊर्जा ही पूर्ण निरापद नहीं है? क्या ऊर्जा का न्यूनतम उपयोग, जिसे करते हुए हमारे पूर्वज करोड़ों वर्षों से इस पृथिवी को सुरक्षित रखे हुए थे, ही हमारा आदर्श नहीं होना चाहिए? क्या त्यागवाद को भोगवाद की अपेक्षा वरीयता नहीं देनी चाहिए?

12. क्या यह विचारणीय विषय नहीं होना चाहिए कि जिस जीवनशैली एवं विकास की अवधारणा ने विगत 100 वर्षों में ही इस धरती को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है, जबकि इस कथित विकास के अभाव में इस धरती पर करोड़ों वर्ष से मनुष्य व प्राणी सुखपूर्वक रहते आये हैं, उस विकास व जीवनशैली को तत्काल त्यागने का समय आ गया है। जब हमारा जीवन ही संकट में है, तब इन सुविधाओं का उपयोग कौन करेगा? क्या कथित विकास के साथ मरने की अपेक्षा प्राकृतिक व प्राचीन जीवनशैली से जीना अधिक बुद्धिमत्ता नहीं है?

13. क्या वैज्ञानिक आकाश के भी आधारभूत तत्त्व, जिसकी कल्पना भी अभी वैज्ञानिक नहीं कर सकते, उस समष्टि

मनस्तत्त्व की विकृति वा प्रदूषण पर कभी विचार कर पायेंगे ? जिसके प्रदूषित होने से न केवल इस धरती का विनाश (भूकम्प, सुनामी, दावानल, बाढ़, चक्रवात आदि के कारण) होगा, अपितु दूसरे लोकों एवं हमारे निकट स्थित सूर्य्यलोक की क्रियाएँ भी प्रभावित होंगी ? भविष्य में सूर्य्य पर ऐसी घटनाएँ घटेंगी, जिनके भयंकर दुष्प्रभाव से पृथिवी पर हमारा न केवल सम्पूर्ण सूचना–संचार तन्त्र क्षत–विक्षत होगा, अपितु भयानक जलवायु परिवर्तन से मौसम–तन्त्र अस्त–व्यस्त होकर हमारा जीवित रह पाना कठिन हो जायेगा।

**14.** क्या कोई वैज्ञानिक इस बात को जानने का प्रयास करेगा कि पृथिवी पर मांस अथवा अंग्रेजी दवाओं हेतु मारे जाने वाले निरीह प्राणियों के क्रन्दन से उत्पन्न पेन वेव्स सम्पूर्ण मनस्तत्त्व को विकृत कर रही हैं, जिसके उपर्युक्त घातक परिणाम दिखाई दे रहे हैं ?

एक भारतीय भौतिक वैज्ञानिक प्रो० मदन मोहन बजाज ने इस दिशा में शोध किया है और वे मुझे भी जानते हैं तथा मुझसे मिलने यहाँ भी आये थे। वे पेन वेव्स के घातक परिणाम की चर्चा करते हैं और मैं इससे आगे मिथ्या– भाषण, ईर्ष्या, क्रूरता, लोभ, कामुकता, द्वेष आदि की नकारात्मक तरंगों से मनस्तत्त्व तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रदूषण की बात कहता हूँ। दुर्भाग्य से आज सर्वत्र यही देखा जा रहा है। जो वैज्ञानिक इनका जलवायु परिवर्तन से कोई सम्बन्ध नहीं मानें, मैं एवं मेरी टीम उन वैज्ञानिकों, चाहे वे किसी भी स्तर के व कहीं के भी हों, को खुली चर्चा की चुनौती देती है। वास्तविकता यह है कि इस कथित वैज्ञानिक व तकनीकी विकास ने इन्हीं तरंगों से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भर दिया है और इस कारण

विनाश होगा ही और संसार भर में अपराध भी बढ़ेंगे और उनको रोकने के लिए नाना तकनीकों का आश्रय लेने का असफल प्रयास होगा, जिससे पर्यावरण समस्या निरन्तर गम्भीरतर ही होती जायेगी।

**15.** क्या संसार के बुद्धिमान् राष्ट्राध्यक्ष वा वैज्ञानिक इस वास्तविकता को कभी समझने का प्रयास करेंगे कि वृक्ष एवं पशुओं की संख्या तो ऊर्जा की आवश्यकता के अनुसार बढ़ायी जा सकती है। वृक्ष कटेंगे, तो उगाये भी जा सकते हैं, परन्तु भूगर्भ के दोहन से उत्पन्न रिक्तस्थान को कोई नहीं भर पायेगा, तब क्यों कर रहे हैं दोहन और बुला रहे हैं विनाश को ?

**16.** सौर ऊर्जा की बात करने वाले क्या बतायेंगे कि जिस प्रकार आज महानगरों के बाहर तथा गाँव-गाँव, गली-गली प्लास्टिक आदि कचरे के ढेर लगे हैं, वैसे कभी सोलर प्लेटों वा बैट्रीज के ढेर लग जायेंगे, तब परिणाम क्या होगा ?

**17.** क्या संसार के सभी देशों, विशेषकर जी-20 देशों के राष्ट्राध्यक्ष अपने-अपने देश के उन वैज्ञानिकों व पूंजीपतियों, जो जलवायु परिवर्तन के नाना कारणों का खुलासा करते हुए चेता रहे हैं, का झूठ पकड़ने वाली तकनीक से परीक्षण कराने की कृपा करेंगे, जिससे वास्तविकता संसार के सम्मुख प्रकट हो सके ?

मान्यवर! अभी ये सत्रह प्रश्न ही पर्याप्त हैं, इनका उत्तर जब मिल जायेगा, तब वैज्ञानिकों से अग्रिम चर्चा के लिए हम सदैव उद्यत हैं, अभी तो मेरे द्वारा आपके माध्यम से कोरोना विषयक पूछे गये 37 प्रश्नों के उत्तर भी अप्राप्त है। क्षमा चाहूँगा मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वैज्ञानिकों अथवा सरकारों को सत्य का पता लगाने में

कोई रुचि ही नहीं है। अधकचरे विज्ञान पर दम्भ करने वाले अथवा बड़े-बड़े पूंजीपतियों के द्वारा खरीदे गये वैज्ञानिकों को सभी राष्ट्राध्यक्ष आदर्श मानकर उनका अन्धानुगमन कर रहे हैं। विनाश को विकास मानकर नेत्र बन्द करके दौड़े जा रहे हैं, परन्तु मैं सचेत करना चाहूँगा कि सभी पीले रंग के पदार्थ सोना नहीं हो सकते। इसलिए हम कथित विकास की इस चमक के पीछे छिपे विनाश को देखने का प्रयास करें, अन्यथा इस धरती पर ऐसा प्राकृतिक भीषण ताण्डव होगा कि राहत व बचाव दल भी स्वयं असहाय हो जायेंगे और यह धरती श्मशान बन जायेगी।

मान्यवर! इस पत्र में केवल जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित तकनीक व विकास की ही चर्चा की है, अन्य की नहीं। जी-20 देशों के सम्मेलन में एक बार फिर झूठ फैलाकर जनसामान्य के विरुद्ध योजनाएँ बनायी जा सकती हैं, ऐसी पूर्ण आशंका है और कुछ धनलोलुप उद्योगपति पर्दे के पीछे इन योजनाओं की चमकीली प्रतीत होने वाली रूपरेखा बना सकते हैं।

अन्त में मैं आपसे सम्पूर्ण धरती को बचाने के लिए इतना निवेदन करना चाहूँगा कि शाकाहार, दुग्धाहार, गो-आधारित कृषि, सदाचार व सादगीपूर्ण जीवनशैली, सुविधाओं का कम से कम उपयोग एवं गोघृत से यज्ञ, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा आदि को जब तक नहीं अपनाया जायेगा, तब तक हम किसी भी स्थिति में विनाश से बच नहीं पायेंगे। वैदिक ज्ञान-विज्ञान ही विश्व का आधार होना चाहिए, क्योंकि वेद कोई मजहबी ग्रन्थ नहीं, बल्कि यह ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ है। इसके आधार पर मैंने सृष्टि-उत्पत्ति का **'वैदिक रश्मि सिद्धान्त'** संसार को दिया है, जो विश्व के किसी भी वैज्ञानिक सिद्धान्त से कम से कम एक सौ वर्ष आगे है।

अब आपसे ही कुछ आशा है कि आप अपने विवेकी व साहसी व्यक्तित्व का उपयोग करके अपने कदमों का पुनरीक्षण करके इस धरती को बचाने के लिए खुलकर सामने आयें। यदि आप यह कर सके, तो विश्व में आप सबके आदर्श नेता बन जायेंगे और मानवजाति सदैव आपकी ऋणी रहेगी।

आशा व विश्वास के साथ

भवदीय

**आचार्य अग्निव्रत**

**संस्थापक प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान**

(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)

फोन नम्बर : 9829148400, ईमेल : info@vaidicphysics.org

/vaidicphysics www.vaidicphysics.org